अधिक आमदनी देती हैं कद्दूवर्गीय सब्जियां

भूमि कद्दूवर्गीय सब्जियों के लिए दोमट मिट्टी से लकर बलुई दोमट मिट्टी में सफल खेती की जाती है, अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए इसकी खेती 5.5 से 6.8 पी0एच0 तक की भूमि अच्छी होती हैं।

बुवाई अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए फरवरी मार्च तक बुंबाई कार्य संपन्न कर लेनी चाहिए, बुवाई नायिं बनाकर उत्तर से दक्षिण दिखा में पश्चिम किनारे की मेड़ पर करनी चाहिए।

प्रजातियां

तुरई –आजाद तुरई–1, कल्याणपुर हरी चिकनी , पूसा चिकनी, पूसा नसदार, पूसा गुच्छेदार, सतपुतिया।

लौकी– आजाद नूतन, आजाद हरित, कल्याणपुर लंबी हरी, आजाद संकर– पूसा नूतन, पूसा समर।

करेला–कल्याणपुर सीना, पूसा विशेश ,अर्का हरित, पंजाब करेला–14

कद्दू– पूसा विश्वास , अर्का चन्दन आजद, पंपकिन, पूसा अलंकार, अलीगंज गोल।

टिन्डा अर्का टिडा, बीकानेरी टिन्डा, हिसार सेलेक्शन

बीज शोधन सर्दी के मौसम में तापक्रम कम होता है इसलिए बीज को अंकुरित करके बोना चाहिए । शीध्र एवं स्वस्थ्य अंकुरण के लिए बीज को बोरे में लपेट कर तथा भिगोकर कम्पोस्ट के गडढे में दबा देने से अंकुरण शीध्र प्रारंभ हो जाता है।

सर्दी के मौसम में अनेकों प्रकार की सब्जियां बाजार में उपलब्ध रहती हैं जबकि गर्मी के मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जि प्रमुखतः अधिक रहती है।

जायद में सफल खेती के लिए किससान भाईयों को निम्न बिन्दुओं पर ध्यान चाहिए।

खाद एवं उर्वरक बुवाई से एक माह पहले 15–20 टन प्रति हैक्टेयर की दर से अ हुई गोबर की खाद मिट्टी में मिला देनी चाहिए।

सिंचाई अंकुरित बीज बोने के तुरन्त बाद पहली सिंचाई करने की आवश्यकता हो पौधा के विकास के लिए समय–समय पर सिंचाई करने रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण–खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए समय–समय पर निरा गुड़ाई करते रहना चाहिए।

उपज कद्दूवर्गीय सब्जियां में सामान्यतः अच्छी उपज प्राप्त होती है। जैसे–तुरई क्वि, लोकी व कद्दू 250 क्वि करेला 125 क्वि तथा टिण्डा 100 क्वि प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है।

बीज दर एवं दूरी

फसल	बीज दर (कि0ग्रा0 / है0)	पंक्ति से पंक्ति व पौध से (पौध की दूरी से0मी0)	जैविक मंडी मूल्य (रू0) प्रति कि0ग्रा0
तुरई	2–3	150X30	10–15
लौकी	4–5	200X50	10–15
करेला	3–5	100X3	10–15
कद्दू	4–5	200X50	10–15
टिण्डा	4–5	125X30	10–15
खीरा	3–5	100X30	15–20

पंकज कुमार
उत्पाद विकास अधिकारी

जैविक खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट

खेत में हरी खाद, फसलों के अवशेष, बायोगैस प्लान्ट से निकला मलवा, खली, केंचुए और कम्पोस्ट खाद के इस्तेमाल से भूमि की उर्वरता को बढ़ाया जा सकता है। भूमि का परिष्कार करने वाली इन चीजों का उपयोग मिट्टी की सूक्ष्मरंध्रता, वायुसंचार, तापमान, जलशोषक क्षमता तथा सूक्ष्मजीवों (जीवाणुओं) में बढ़ोत्तरी करता है जिससे जलमण्डल (राइजोस्फियर) के वातावरण में बदलाव के साथ–साथ फसलों के लिए आवश्यक तत्व जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम के साथ–साथ सूक्ष्म पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। जैविक खादों में गोबर की खाद तथा कम्पोस्ट, हरी खाद, मैले की खाद, अखाद्य खलिया (चूलू की खली) तथा शहरी कचरे आदि की खादें है। कम्पोस्टिंग (खाद बनाना) एक ऐसी जैव रसायनिक प्रक्रिया है जिसमें जीवों के विभिन्न और मिश्रित वर्ग संयुक्त रूप से कार्बनिक पदार्थो के उपघटन तथा सड़ाने का कार्य करते है और उससे गहरे रंग के जीवांय (ह्यूमस) में बदल देते हैं। यदि इसको अच्छी तरह से तैयार किया जाये तो यह गुणवत्ता में सर्वोत्तम खाद है।

कम्पोस्ट गड्ढों का परिमाप

साधारण ग
गहरा, 1.5 से 2.0
उपलब्ध सामाग्री तथा पश
के अनुसार इसकी ल
है। साधारणतयाः, 1 जो
के लिए लम्बाई 2.5
रखी जाती है।
धीरे–धीरे बढ़ाते रहते
अपेक्षा ऊपर के
मीटर अधिक चौड़ा
गड्ढे से लगभग 2.5 टन कम्पोस्ट तैयार हो जाती है।

कम्पोस्ट कैसे बनाये

कम्पोस्ट बनाने के लिए पौधों के अवशेष, खरपतवार, ठूँठ, तने, हरी सूखी पत्तियाँ, कटाई–छटाई किया गया अवशेष, भूसा, कुट्टी, चारा, घास–फूस, चीड़ की पत्तियाँ, वनस्पतियों का कचरा, धान का पुआल, गोबर और मूत्र, लकड़ी की राख, मिट्टी पानी इत्यादि है। कम्पोस्ट बनाने की दो विधियाँ है।

अ. साधारण कम्पोस्ट

ब. नेडेप कम्पोस्ट

कम्पोस्ट के गड्ढों का स्थान चयन

साधारण कम्पोस्ट

इसके लिए भूमि के अन्दर गड्ढे बनाते हैं। गड्ढों को ऐसे स्थान पर बनाया जाये जो ऊँचाई पर हो ताकि इसमें बरसात का पानी न आ सके। गड्ढा पशुशालागोबर की खाद या जंगल की मिट्टी का टीका लगाया जाता है जिसमें सूक्ष्म तथा पानी के साधन के निकट होना चाहिए। भारी वर्षा से बचाव के लिए गड्ढों कीवाणु खाद को सडाने का कार्य शीघ्रता से कर सके। तत्पश्चात गड्ढे मे ऊपर साया (शेड) बनाया जाता है।

गड्ढा भरने की विधि

प्रथम भराई– पहली पर्त

- गड्ढा भरने से पूर्व अन्दर की दीवारों तथा फर्श को गोबर और मिट्टी मिश्रण से लिपाई कर दें।
- प्रारम्भ में गड्ढे की सतह पर भूसा, तने, ठूँठ, पत्तियाँ, खरपतवार, कालाबॉसा, चीड़ की पत्तियाँ आदि।

दूसरी पर्त

- पहली पर्त के ऊपर पशुओं का बिछावन जिसमें पशुओं का गोबर व मूत्र मिला हो, मिट्टी के साथ मिलाकर 10–15 से.मी. की पर्त समान रूप से

तीसरी पर्त

- दूसरी पर्त के ऊपर 5.0 कि.ग्रा. मूत्र मिली मिट्टी तथा 5.0 कि. ग्रा. पुरा पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए पर्यायप्त मात्रा में पानी का छिड़काव किया जाता है।

शेष पृष्ठ 5 पर